कथा क्रम

अप्रैल–जून, 2026
मूल्य – ₹ 60

कथासाहित्य
कला
एवं
संस्कृति
की
त्रैमासिकी

ISSN-2231-2161

कथा क्रम

कथासाहित्य, कला एवं संस्कृति की त्रैमासिकी

वर्ष : 28 अंक : 108

अप्रैल-जून 2026

कहानियां

17 **रणीराम गढ़वाली** : गांव और मां

24 **सीमा स्वधा** : दूध पथरी

31 **उमेश चरपे** : एक शाम

37 **नीना अंदौत्रा** : धूसर ख़ामोशी

52 **नृपेन्द्र अभिषेक** : जीवन साथी

57 **रमेश शर्मा** : उस धीमी आवाज़ की दिशा में

62 **दीप्ति सारस्वत** : अवांछित

66 **जिज्ञासा सिंह** : चोंगा

73 **पारमिता शतपथी** : शर्त
अनुवाद-प्रदीप कुमार राय

लघुकथाएं

30 **मनीष कुमार पाटीदार** : आधी धूप

41 **संतोष कुमार अकवि** : असमान समानता

56 **महेन्द्र मद्धेशिया** : बिना स्क्रीन की शाम

कथा नेपथ्य

05 **मधुरेश** : शरतचन्द्र और उनका 'शेष प्रश्न' : प्रेम-दृष्टि और स्त्री-चिंता के सवाल

लेख

42 **कंवल भारती** : भगत सिंह की दृष्टि में सांप्रदायिक दंगों का इलाज

48 **डॉ. साधना यादव** : अस्मितावादी विमर्श के आईने में रामकथा : संदर्भ इक्कीसवीं सदी के हिन्दी उपन्यास

कविताएं

78 **राजकुमार कुम्भज** : प्रभावशाली प्रकाश में, लोहार जैसे निरंतर प्रहार जैसे

78 **चारूमित्रा** : हर्फ, शब्दों की कोख

79 **सरस्वती रमेश** : कील सा चुभता अगस्त

80 **चंचल सिंह साक्षी** : आगमन, त्रिकोण, खारा जल

81 **रेखा शाह आरबी** : स्मृतियां, चुप्पियां

कथा-शोध

82 **डॉ. गिरधारी लाल लोधी** : समकालीन हिन्दी कथा साहित्य में पर्यावरण विमर्श

समीक्षाएं

88 **मीना गुप्ता** : स्त्री-चेतना के विविध रूप (उपन्यास : गोविंद मिश्र)

90 **डॉ. अनुपम पटेल** : शून्य से शतक तक का सफर : ज्योतिकलश (उपन्यास : संजीव)

93 **प्रताप दीक्षित** : कल्पना के मायालोक के पीछे यथार्थ की विडंबनाओं की कहानियां (प्रतिनिधि कहानियां : भालचंद जोशी)

95 **डॉ. संजीव कुमार मौर्य** : समय की कश्मकश को सहेजने की कवायद 'जस्ट चिल यार' (उपन्यास : रजनी गुप्त)

97 **डॉ. रूपाली दिलीप चौधरी** : वर्तमान जगत की प्रासंगिकता से रूबरू : 'प्रतिकारिणी' (उपन्यास : राजा सिंह)

99 **सुषमा मुनीन्द्र** : आदिवासी समाज का सजीव चित्रण (उपन्यास : डॉ. उर्मिला शुक्ला)

102 **डॉ. विजया सती** : टूटने के क़गार पर (कहानी संग्रह : हंसादीप)

02 **संपादकीय** : साइबर क्राइम/डिजिटल अरेस्ट

आवरण : **नरेन्द्र नागदेव**

रेखाचित्र : **राजेन्द्र परदेसी**

संपादक
शैलेन्द्र सागर

संपादन परामर्श
रजनी गुप्त

सहयोग
मीनू अवस्थी

प्रबन्ध सहायक
राम मूरत यादव

संपादन संचालन : अवैतनिक

संपादकीय सम्पर्क :
डी-107, महानगर विस्तार, लखनऊ-226006
दूरभाष : 09415243310
e-mail : kathakrama@gmail.com
e-mail : kathakrama@rediffmail.com

इस अंक का मूल्य : 60 ₹
सदस्यता शुल्क : व्यक्तिगत त्रैवार्षिक-900 ₹, आजीवन 4000 ₹
संस्थाएं : वार्षिक-400 ₹, त्रैवार्षिक-1100 ₹, आजीवन 5000 ₹
(kathakram, SBI, Mahanagar Branch, Lucknow A/c 10059002392 IFSC-SBIN0008189)

पत्रिका में प्रकाशित रचनाओं में व्यक्त विचारों से संपादक की सहमति आवश्यक नहीं है।

मुद्रक : प्रकाश पैकेजर्स, प्लाट नं. 755/99 A, गोयला इनडस्ट्रियल एरिया, यू.पी.एस.आई.डी.सी. -देवा रोड, चिनहट, लखनऊ-226019

साइबर क्राइम/डिजिटल अरेस्ट

समाज में सामाजिक, आर्थिक, औद्योगिक, तकनीकी विकास तथा विविध संरचनाओं में परिवर्तन के साथ जैसे जैसे जीवन शैली में बदलाव आता है, वैसे वैसे ही समाज को नए प्रकार के अपराधों से भी जूझना पड़ता है। अनपढ़, जाहिल और भीरू अपराधियों की तुलना में आज के अपराधी शिक्षित, बुद्धिमान, शातिर, दुस्साहसी और तकनीकी रूप से निपुण हो गए हैं। भौतिक समृद्धि की चकाचौंध से ग्रस्त उनकी महत्वाकांक्षाएं विस्तृत और असीमित हो गई हैं। वे नए अपराधों की खोज करते रहते हैं जिसमें आमदनी ज्यादा हो और जोखिम कम। कभी वे कानून व सुरक्षा एजेन्सियों को धता बताने और लंबे दौर तक उनके चंगुल से बच निकलने में भी सफल हो जाते हैं। अलबत्ता देर सवेर अपने अपराधों का खामियाजा उन्हें भुगतना पड़ता है।

मेरे नाना आगरा के आसपास छोटे रेलवे स्टेशनों पर स्टेशन मास्टर रहे थे। स्टेशन के आसपास इक्का दुक्का आवास थे जहां अक्सर चोर, उचक्कों का डर बना रहता था। घरों से बर्तन, कपड़े, एकाध चांदी का गहना पा जाना उनके लिए पर्याप्त था। मां बतलाती थीं कि कभी वे घर की चहारदीवारी पर बैठे या उससे झांकते नजर आते थे। नाना जी लाठी लेकर फटकारते तो नौ दो ग्यारह...। आज के दौर में ऐसे कायर अपराधियों की कल्पना भी नहीं की जा सकती। उनसे मुकाबला करना या उन्हें चुनौती देना जान को जोखिम में डालना है।

समाज में आए बदलावों के साथ अपराधों की प्रवृति और उनका स्वरूप भी बदलता है। उन्नीसवीं सदी में प्रचलित ठगी से लेकर आज तक अपराधों के विविध आयाम परिलक्षित हो रहे हैं। ठगी कितना गंभीर अपराध था, इसका अंदाजा इस बात से लगाया जा सकता है कि अंग्रेजी शासन के दौरान गवर्नर जनरल लॉर्ड विलियम बैंटिक ने 1835 में ठगी अपराधों का खात्मा करने के लिए बनाए गए विभाग के अधीक्षक कर्नल विलियम स्लीमेन के साथ मिल कर इन अपराधों के उन्मूलन का बीड़ा उठाया जिसमें यात्रियों को लूटकर उनकी हत्या कर दी जाती थी। स्वाभाविक है, इस जुर्म पर लगाम लगाने का श्रेय स्लीमेन को दिया जाता है। वक्त के साथ नए प्रकार के अपराध समाज को आतंकित करते रहे जिनका विस्तृत ब्योरा देना संभव नहीं है। अपनी चौंतीस वर्ष की पुलिस सेवा में ही हमने विविध प्रकार के अपराधों से मुकाबला किया है। अस्सी के दशक में रोड होल्डअप (जो ठगी का ही नया संस्करण था), अपहरण (जिसे आगरा व चम्बल क्षेत्र में पकड़ कहा जाता था), बैंक लूट, कैश वाहनों की लूट, बिजली तार/ट्रांसफॉरमर चोरी, टप्पेबाजी, बैंक फ्रॉड आदि के जुर्म पूरी तरह समाप्त न भी हुए हों किंतु उनकी आवृत्ति और आतंक में कमी तो आई ही है।

आज अपराधों का अत्यंत आधुनिक और तकनीकी स्वरूप हमारे सामने है जिससे हजारों की संख्या में पढ़े लिखे, उच्च पदाधिकारीगण और योग्य व्यक्ति इसके शिकार बन रहे हैं। इसे साइबर क्राइम का नाम दिया गया है क्योंकि इन्हें उच्चस्तरीय तकनीक का प्रयोग करके कारित किया जाता है। स्वाभाविक है, इसमें लिप्त अपराधी सुशिक्षित, कम्प्यूटर व अन्य तकनीक में दक्ष, अंग्रेजी व अन्य भाषाओं में सक्षम युवा हैं जिनका संजाल सुदूर देश में ही नहीं, विदेशों तक में विस्तीर्ण है। इसलिए उन तक पहुंचना आसान नहीं